International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 14-08-2021, Accepted: 28-08-2021, Published: 14-09-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 21-22

रेणु के रिपोर्ताजों में सामाजिक यथार्थ

बिजेन्द्र कुमार यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, मुरारका कॉलेज सुल्तानगंज, तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश
रिपोर्ताज हिन्दी साहित्य की एक आधुनिक, नवीन और प्रभावी विधा है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के द्वारा आरम्भ की गई इस विधा को कथा–शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु ने अधिक यथार्थ–परक और प्रभावी बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। रेणु जी ने अपने रिपोर्ताजों से आम पाठक गण भी जुड़ाव का अनुभव करते हैं। इनके द्वारा प्रयुक्त एक एक शब्द वर्णित परिवेश की प्रकृति के कण–कण से हमारा तादात्म्य स्थापित करा देते हैं। पानी का मटमैला रंग, कुत्ते की भूँक, गाय भैंसों के गले की घंटी, पंछियों की चहचहाहट, पेड़–पौधों की पत्तियों की सरसराहट इत्यादि इनके रिपोर्ताजों में अपनी गाथा स्वयं कह देते हैं। इनके रिपोर्ताज सम्बंधित अंचलों के ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के प्रतिनिधित्व करते हैं।

मूलशब्द: रिपोर्ताज, अंचल, यथार्थ, जुड़ाव, प्रतिनिधित्व

प्रस्तावना
साहित्य, हमारी बौद्धिक, सांस्कृतिक, वैचारिक एवं भावात्मक अवस्थाओं के सार्वजनिक–सार्वकालिक प्रकटीकरण का एक माध्यम है। यह हमारे सनातन अस्तित्व का प्रमाण एवं हमारी भविष्योन्मुखता का प्रमुख संकेत भी है।

साहित्य के स्थायी (लिखित) रूप को गद्य एवं पद्य विद्या में हम जानते पहचानते हें। पद्य को समझने एवं समझाने के लिए हमें विशेष योग्यता एवं परिस्थिति की आवश्यकता होती है, लेकिन गद्य के सरल–स्पष्ट रूप होने के कारण यह सर्वग्राह्य, प्रभावी एवं बहुउपयोगी होता है।

गद्य के विविध रूपों यथा–कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलेख, संस्मरण, पत्र–लेखन एवं 'रिपोर्ताज' में से रिपोर्ताज पर चर्चा करते हुए हिन्दी साहित्य के प्रमुख रिपोर्ताज–लेखक श्री फणीश्वर नाथ रेणु के रिपोर्ताजों के सामाजिक यथार्थ को प्रकट करना मेरा ध्येय है।

'रिपोर्ताज' पत्रकारिता में व्यवहृत एवं उसके आधार शब्द रिपोर्ट' का ही परिष्कृत एवं विकसित शब्द हैं। एक तरफ जहाँ 'रिपोर्ट' में विशुद्ध यथार्थ, स्पष्टता एवं खरापन होता हैं, वहीं 'रिपोर्ताज' यथार्थ की आधारभूमि पर कलात्मकता एवं रोचकता लिए हुए रहता हैं।

उपर्युक्त शीर्षक को लक्ष्य करते हुए आलेख का आरंभ इस प्रकार किया जा रहा है:–

बिहार की कोसी की विभिन्न धाराओं से घिरी हुई; उत्तरी बिहार की नीची; बालुकामय धरती कोसी की विभिन्न धाराओं से वहाँ की उत्पीड़ित; शोषित; दलित; रोग ग्रस्त मलेरिया; फलेरिया; तथा विभिन्न रोगों से अकाल मृत्यु को प्राप्त बच्चे; वृद्ध और जवानों की अकाल मौत के ग्राम में आज भी जाने वाले जन–जीवन; आह–क्रंदन से पीड़ित है। गरीबी से संघर्ष करती हुई इसी धरती पर जिला अररिया औराही हिंगना नामक गाँव में 4 मार्च, 1921 ई० में फणीश्वर नाथ रेणु जैसे महान साहित्यकार का जन्म हुआ। रेणु जी का जन्म एक गरीबी और ऋण से जूझते हुए परिवार में हुआ; इसीलिए उनके माता–पिता ने इनका उपनाम 'ऋणुआ' तदनंतर 'रेणु' रखा।

रिपोर्ताज साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमे घटनाओं; जीवन–स्थितियों या सामाजिक परिवेश का अत्यंत ही जीवंत चित्रण होता है, क्योंकि लेखक इनका मात्र दर्शक नहीं होता; अपितु उसकी सहभागिता भी इसमें होती है। रेणु के विभिन्न विषयों पर लिखे गए रिपोर्ताजों में उनका जीवन; उनकी मनः स्थितियों एवं परिवेश सबसे अधिक उभरकर आया है। वे वर्ण्य–विषय को ज्यादा जीवंत एवं प्रामाणिक बनाने के लिए अपने को भी एक चरित्र के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस तरह ये रिपोर्ताज उनके जीवन के कई प्रसंगों को उभार कर रख देते हैं जिससे उनकी जिन्दगी के कई अनछुए पहलू उजागर होते हैं। जगह–जगह दृश्यों को देखकर उनकी भाव–स्थितियों की बदलती हुई तस्वीर भी मिलती है।

भारत यायावर ने रेणु जी के संबंध में कहा है – ''रिपोर्ताज ही वह विधा है; जिसमे रेणु ने अपने विभिन्न जीवन–प्रसंगों को विस्तार से रखा है। इन रेपोर्ताजों में इनके जीवन के साथ–साथ इनके घर–परिवेश, साथी–संगी भी जीवंत रूप में चित्रित हुए हैं। इस तरह इनकी अपनी सहभागिता का प्रमाण ये रिपोर्ताज देते हैं। इनकी कहानियों या इनके उपन्यासों में इनका जीवन एवं व्यक्तित्व इस तरह उभर नहीं पाया है। इस कारण से भी इनके रिपोर्ताजों का अपना विशिष्ट महत्व है।

रेणु जी एक किसान भी थे। किसान के जीवन को इन्होंने नजदीक के नजरिये से देखा और समझा था। अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों में इन्होंने स्वाधीनता संघर्ष के साथ–साथ किसान आन्दोलनों में भी भाग लिया था। प्रारंभ में वे समाजवादी थे और रेणु जी उस समय के साप्ताहिक पत्र 'जनता' में रिपोर्ताज लिखा करते थे, इन्होंने टूटते–बिखरते सपनों की दास्तान में लिखा है– ''अपनी पार्टी की पत्रिका होती थी, उसमें लिखता था, लोग पीठ ठोकते थे। कहते थे बहुत अच्छा लिख रहा है। मगर जो मिलिटेंट वर्कर थे वे कहते थे– ''नहीं सब कुछ सही है, मगर एक खामी है, खामी यह कि बाढ़ और अकाल में काम करने वाले जो लोग जाते हैं, नौजवानों का वह गिरह जो नाव लेकर गाँव – गाँव पहुँचता है, रोटियाँ बाँटता है आपने तो उसे आदमी ही रखा। उसे पार्टी का आदमी होना चाहिए था और अपनी पार्टी का आदमी होना चाहिए था और अपनी पार्टी का आदमी होना चाहिए था।''[1]

रेणु जी समाजवादी पार्टी से त्याग–पत्र देकर साम्यवादी पार्टी में शामिल हो गए। अपने संघर्षों के अनुभव पर पुनः रिपोर्ताज लिखने लगे तथा अपने साथियों के साथ उत्तरी बिहार के गाँव में

रात और दिन अपने समय बिताने लगे; वहाँ पर रात में कभी–कभी ढोलक–झाँझ, नाच–गान की स्वर लहरी मँडराती आती। रेणु के इस आत्म–वक्तव्य से स्पष्ट है कि उनके साहित्य में जीवन की विविधता, विषमता एवं अनेक सामाजिक – सांस्कृतिक छवियों की जो बहुरंगी छूटा बिखरी हुई मिलती है; वह इनके अपार जीवनानुभवके कारण ही। ये राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता के साथ–साथ लेखक भी थे। इनके लेखन में खासकर रिपोर्ताज में इनका यह जीवन एवं परिवेश प्रत्यक्ष रूप में प्रकट हुआ है। 'पटना–जलप्रलय' में रेणु ने अपने प्रारंभिक जीवन के कई प्रसंगों का संस्मरण प्रस्तुत किया है। उदाहरण के तौर पर यह प्रसंग देखः ''1947 मनिहारी के इलाके में गुरु जी के साथ गंगा मैया की बाढ़ से पीड़ित क्षेत्र में हम नाव पर जाते। कहीं जमीन पर उतर जाते। वहाँ हमे चींटी–चींटो से लेकर साँप – बिच्छु और लोमड़ी – सियार तक पनाह लेते मिलते। हमारे पाँव में 'पकाही घाव' सड़ जाती। तलवों में भी घाव हो जाता।''[2]

रेणु का लगाव कुत्तों से भी थाः कुत्ते कभी रात में रोने लगते थे जिससे कलेजा सिहर जाता। कुत्तों की छठी इंद्री बहुत सक्रिय रहती है। वे आने वाले संकट को भाँप जाते हैं। इसका भी इन्होंने अपने 'पटना जल – प्रलय' नामक रिपोर्ताज में जीवंत रूप में चित्रण किया है। विभिन्न नदियों के जलप्रलय का भी चित्रण इन्होंने अपने रिपोर्ताज में किया है।

रेणु का पहला रिपोर्ताज 'विदापत नाच' 1945 में छपा था। इसमें ये यह स्वीकार करते हैं कि जब वे पढ़–लिखकर विशिष्ट हो गए तो देहाती या गँवई लोक–संस्कृति से कट गए। किन्तु बाढ़ में इन्होंने अपनी भूल को जल्दी ही सुधार लिया और इसमें दिलचस्पी लेने लगे। यही दिलचस्पी इनके कथाकार को एक ऊँचाई प्रदान करती है।

एक तरफ रेणु लोक–जीवन से धीरे–धीरे अपनी पैठ बनाते हैं दूसरी ओर ये जनता को संगठित करने; गुलामी के बन्धनों को तोड़ने के लिए भी कारगर कोशिश करते हैं इनके अंचल से सटा है– विराटनगर। वहीं इन्होंने कृष्ण प्रसाद कोईराला द्वारा स्थापित 'आदर्श विद्यालय' में शिक्षा पाई थी तथा इनके पाँच पुत्रों के धर्म भाई की तरह नेपाली जनता को जागरित करने के लिए एवं बर्बर राजाशाही की गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्ष किया था। 'सरहद के पार' नामक रिपोर्ताज में ये इसकी एक झलक देते हैं एवं 'नेपाली क्रांति–कथा' में विस्तार से उस जनयुद्ध का वृतांत लिखते हैं। 'सरहद के पार' की यह स्पष्टोक्ति ध्यान देने योग्य है; जिससे इनके जीवन के प्रारंभिक दौर की क्रांतिकारी चेतना का पता चलता है।

रेणु की नेपाल के प्रति संलिप्तता। ये यह साफ शब्दों में घोषित करते हैं कि इनके अन्दर की क्रांतिकारिता एवं जनपक्षधरता का भाव नेपाल में ही उदित हुआ है। यह रिपोर्ताज साप्ताहिक हुआ था और 4 मार्च से विराटनगर के मजदूरों की ऐतिहासिक हड़ताल शुरू हुई थी जिसका हिस्सा स्वयं रेणु भी थे और इसमें गिरफ्तार भी हुए थे; इन्हें तीन महीने की सजा हुई थी तब ये 'जनता' में बराबर लिखा करते थे। 'जनता' के संपादक रामवृक्ष बेनीपुरी इनके प्रेरक थे, जो क्रांतिकारी पत्रकारिता के बिहार के एक स्तंभ थे, वे जनता में नेपाल की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों पर बराबर रपटें छापा करते थे, जिसमें कुछ रेणु बातों की सूचनाएँ भी देते हैं– ''बदकिस्मती से कहीं आपके बैग से जनता की एक कॉपी निकली या आप 'बेनीपुरी जी' निकले तब तो बड़ी मुश्किल है। मामला बहुत मँहगा पड़ जाएगा। क्योंकि जनता और 'बेनीपुरी जी' को यहाँ के बड़े हकीमों से लेकर छोटे सूबा तक जानते हैं। बेनीपुरी जी को घूस में बहुत बड़ी रकम ऑफर की गई थी, किन्तु उसे अस्वीकार कर वे जनता में नेपाल की चिट्ठियाँ प्रकाशित करते रहे–तो बेनीपुरी वहाँ के हकीमों के लिए वास्तव में दूसरी दुनिया के जीव होंगे ही।''[3]

1947 का मजदूरों का यह आंदोलन 1950 में हुए राणाशाही के विरुद्ध संग्राम की पृष्ठभूमि बना। यह नेपाल की जनता में जागरण का पहला शंखनाद था; अक्टूबर 1950 में नेपाल में क्रांति प्रारंभ हुई थी और 1951 की फरवरी के अंत में नेपाल में पहली बार वहाँ लोकतंत्र की स्थापना हुई 'नेपाली क्रांति–कथा' में इस लोमहर्षक युद्ध का जीवंत चित्र उपस्थित किया है। 1950 के सितम्बर महीने में इनके पिता की मृत्यु हो गई थी और अक्टूबर महीने में इनके छोटे भाई महेन्द्र की । इस दोहरे शोक की अवस्था में ये पड़े हुए थे। 'नेपाली क्रांति–कथा' नामक रिपोर्ताज के अंत में रेणु ने लिखा है– ''दो महीना पहले शोकाकुल अवस्था में (बी०पी०) का पत्र मिला था– तुम्हारे पिताजी और छोटे भाई की मृत्य एक ही पखवाड़े में हुई और इस दोहरे दुःख को तुम झेल रहे हो; मालूम हुआ। तुम्हारे दुख को अनुभव कर रहा हूँ। किन्तु इस तरह शोक में डूबे रहने से कैसे काम चलेगा ? फिर इससे कोई लाभ भी तो नहीं। अभी तो न जाने ऐसे कितने शोक–संवाद मिलेंगे – यहाँ आकर देखो–कितने लोग मरने के लिए आए हुए हैं। इस वर्ष का अंत होते–होते तक पता नहीं तुमको कितने प्रियजनों की मृत्यु के समाचार सुनने और सहने को मिलें। पत्र पाते ही यहाँ आ जाओ। एक बार यहाँ आओ तो सही। फिर न हो तो वापस चले जाना। तुम्हारा सांदाज्यु।''[4]

ऐसी शोक की अवस्था में रेणु विराटनगर गए और इस क्रांति के एक सहनायक बने; उन्हें इस जन आंदोलन में पहले प्रचार अधिकारी बनाया गया। ''मुक्ति सेना के प्रचार अधिकारी को दो घंटे के अन्दर ही बी० पी० का एक प्रोफाइल प्रस्तुत कर संवाद–सूत्र को देना है। वह सोच रहा है– कहाँ से शुरू किया जाए ? उसे याद आती है। स्वर्गीय कृष्ण प्रसाद कोईराला (सारे नेपाल में 'पिताजी' के नाम से पुकारे जाते थे) के मुँह सुनी हुए अनेक घटनाएँ। सानो आमां–दिव्या कोईराला की बातें– निर्वासित जीवन के संस्मरण! फिर प्रचार अधिकारी अर्थात रेणु कोईराला परिवार का पूरा वृतांत बताते हैं। रेणु जी को पशु–पक्षियों से अत्यधिक प्रेम था क्योंकि ये स्वतः पशु–पक्षी पालते भी थे! इनके स्वभाव से अत्यधिक परिचित थे! 'डायन कोसी' नामक रिपोर्ताज मैं इस बात की वृहत रूप से चर्चा की है। हिमालय की किसी चोटी पर बर्फ पिघली या किसी तराई में; घनघोर वर्षा हुई और कोसी की निर्मल धारा में गंदले पानी की हल्की रेखा छा गई! कोसी के किनारे रहने वाले इंसान 'मैया' के मन की बात नहीं समझते लेकिन कोसी के दांदले सब कुछ सूंघ लेते हैं! नथुने फुलाकर वे सूँघते, फों–फों करते और मानो किसी डरावनी छाया को देखकर पूँछ उठाकर भाग खड़े होते हैं! चरवाहे हैरान होते! फिर एक नंग–धडंग लड़का पानी की परीक्षा करके घोषणा कर देता – ''गेरुआ पानी''?

मूक पशुओं की आँखों में भयानक भविष्य की तस्वीर उतर आती है। गेरुआ पानी। खतरे की घंटी। मौत की छाया। भीषण बाढ़ की आशंका।

निष्कर्ष

इसप्रकार रेणु जी ने अपने रिपोर्ताज में जीवन की घटनाओं; विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने प्राकृतिक घटनाओं का बड़ा ही सजीव चित्रण साहित्यिक शैली में किया है जो पाठकों के मन को संदेह की और मुखातिब करने की कोशिश करते हैं।

संदर्भ

1. मैला आँचलः राजकमल प्रकाशन 42 वाँ संस्करण वर्ष–2019
2. रेणु के रिपोर्ताजों में अभिव्यक्त उनका जीवन एवं परिवेशः आजकल पात्रिका अप्रैल 2012 पृष्ठ सं०–09
3. रेणु के रिपोर्ताजः भारत यायावर, आज कल पत्रिका अप्रैल–2012, पृष्ठ सं०–12
4. वही